

१००

विविधतीर्थकल्पे

५६. पञ्चकल्याणकस्तवनम् ।

- नमि वि जिण ताण कित्तेमि कल्लाणए, पंच चुइ जंमु वउ नाण निब्राणए ।
 नाणु कत्तिअकसिणपंचमिहिं संभवे, बारिसिहिं नेमि चुइ पउम जंमो भवे ॥ १ ॥
 तेरसिहिं पउमवउ वीर सिवु पंनरसी, मागसिअ तीइ सुविहिस्स अर बारसी ।
 5 मग्गसिरकसिणपंचमि सुविहि जंमए, छट्ठिं सुविहिस्स वीरस्स दसमी वए ॥ २ ॥
 मुक्खु इक्कारसिहिं एउ पउमप्पहे, सुद्धदसमी अर मुक्खु जंमणमहे ।
 पंच इक्कारसिहिं अरवयं निम्मलं, जंमु वउ नाणु मल्लिस्स नमि केवलं ॥ ३ ॥
 चउदसिहिं जंमु पुंनिम वयं संभवे, बहुलपोसे दसमि पास जंमूसवे ।
 गहिअ इक्कारसिहिं पासदिक्खागमो, बारसिहिं जंमु ससि तेरसिहिं संजमो ॥ ४ ॥
 10 नाणु उप्पन्नु चउदसिहिं सीअलजिणे, विमल सिअ छट्ठि संतिस्स नवमीदिणे ।
 गहिअ इक्कारसिहिं चउदसिहिं अभिनंदणे, पुंनिमिहि नाणु धंमे जणाणंदणे ॥ ५ ॥
 माहकसिणाइ छट्ठीइ पउमो चुउ, सीअलो बारसिहिं जंम-दिक्खाजुओ ।
 रिसहजिणु तेरसिहिं पत्तु निव्वुइए, नाणु सेअंसजिण मावसा गिज्जए ॥ ६ ॥
 सुद्ध बीआइ पुण दुन्नि कल्लाणए, जंमु अभिनंदणे नाणु वसुपुज्जए ।
 15 धम्म-विमलाइ तइआइ जाया जिणे, विमल वउ चउत्थि अजिअट्ठमी जंमणे ॥ ७ ॥
 अजिअ वउ नवमि बारसिहिं अभिनंदणे, तेरसिहिं धम्मदिक्खा पसिद्धा जिणे ।
 फग्गुणे कसिणछट्ठीइ नाणुज्जलं, मुक्खु सत्तमि सुपासस्स ससि केवलं ॥ ८ ॥
 सुविहि चुइ नवमि केवलमुसभिगारसी, जंमु सेअंस केवलु सुवय बारसी ।
 गहिउ सेअंसि तेरसिहिं चारित्तयं, जंमु चउदसिहिं वसुपुज्जमावसि वयं ॥ ९ ॥
 20 सुद्धबीआइ अर चविउ जिणपुंगवो, चउत्थि मल्ली चविउ अट्ठमी संभवो ।
 बारसिहिं सुमइ वउ मल्लिजिण निव्वुइ, चउत्थि चित्ताइ पासस्स नाणं चुई ॥ १० ॥
 पंचमिहिं चवणु चंदप्पहे जिणवरे, अट्ठमिहिं जंमु दिक्खा य रिसहेसरे ।
 सुद्धतइआइ कुंथुस्स नाणूसवो, सिद्धु पंचमिहिं णंतोऽजिउ संभवो ॥ ११ ॥
 सुमइ मुक्खो नवमि नाणुमेगारसी, वीरनाहस्स जंमूसवो तेरसी ।
 25 पुंनिमाए तु पउमाभ केवलगुणो, बहुलवइसाहपडिवइ सिवं कुंथुणो ॥ १२ ॥
 सीअलो नाहु बीआइ परिनिव्वुउ, कुंथु वउ पंचमिहिं छट्ठि सीअल चुउ ।
 दसमि नमि मुक्खु तेरसिहिं णंतब्भवो, चउदसिहिं ऽणंतजिण केवलं तह तवो ॥ १३ ॥
 जाउ चाउइसिहिं कुंथु निम्मलमणो, चविउ सुद्धे चउत्थीइ अभिनंदणो ।
 चवणु सत्तमिहिं धम्मंमि तित्थेसरे, सिद्धु अभिनंदणो अट्ठमीवासरे ॥ १४ ॥
 30 अट्ठमिहिं जंमु नवमी वयं सुमइणो, केवलं पत्तु दसमीइ वीरो जिणो ।
 विमलजिण बारसिहिं अजिउ तेरसि चुउ, जिट्ठबहुलाइ सेअंसु छट्ठिहिं चुउ ॥ १५ ॥
 अट्ठमी जंमु नवमी सिवं सुबए, जंमु सिवु तेरसिहिं संति चउदसि वए ।
 सुद्धपंचमिहिं धम्मस्स निब्राणयं, नवमि वसुपुज्जजिण चवणकल्लाणयं ॥ १६ ॥
 जंमु बारसि सुपासस्स तेरसि वयं, बहुलआसाढचउत्थी उसभ चवणयं ।
 35 विमल सिव सत्तमिहिं दिक्ख नवमिहिं नमी, वीर सिअछट्ठि चुइ नेमि सिवु अट्ठमी ॥ १७ ॥

कोल्लपाकमाणिक्यदेवतीर्थकरूपः ।

१०१

पत्तु वसुपुज्जु चउदसिहिं सिद्धासए, सावणे बहुलतिइ सिद्धि सेअंसए ।
 सत्तमिहिं णंत चुइ जंमु अट्टमि नमी, नवमि चुइ कुंथु सिअवीअ सुमई समी ॥ १८ ॥
 पंचमिहिं जंमुछवि नेमि दिक्खारुई, पास सिवु अट्टमिहिं सुवय पुंनिम चुई ।
 भद्दवइसत्तमिहिं संति चुइ ससि सिवे, चवणु अट्टमिहिं सुपासस्स तिस्थाहिवे ॥ १९ ॥
 सुद्धनवमीइ सुविही जिणो निव्वुउ, केवली नेमि आसो अमावसि हुउ ।
 पुंनिमासीइ नमि तिथनाहो चुउ, कुणह मह मंगलं सोमसूरी थुउ ॥ २० ॥

5

॥ इति श्री[सोमसूरिकृतं]कल्याणिकस्तवनं समाप्तम् ॥

॥ ग्रं० काव्य २० ॥